पद १६

(राग: परज - ताल: त्रिताल)

सरले। पूर्ण ब्रह्म एकचि उरलें।।३।।

म्हणुनि बरे झाले बरे झाले। सदुरुला शरण रिघाले।।धु.।।

असतां मुक्ती। हरली जन्म मरण भ्रांती।।२।। माणिक म्हणे जग

तत्त्वमिस इति वाक्य। जेणें जीवशिव झाले ऐक्य।।१।। देही